

पारिजात-हरण नाट

ॐ नमः श्री कृष्णाय ॐ

श्लोक

नमः कृष्णविष्णोद्व्युत्तानन्तशक्ते
नमो रामराजीयनेश्वरभो ते ।
नमो ब्रह्ममूर्ते मुरारे परेश
नमो विश्ववास प्रसीद प्रसीद ॥

अपिच

खगेन्द्र समाख्य निजिल शत्रु
मुदा लीलया देवकीनन्दनो यः ।
प्रियं पारिजातं जहार प्रियार्थं
परेशाय कृष्णाय तस्मै नमो मे ॥

सूय०—पहिलेहि श्रीकृष्णक प्रणाम कये ऊँ सभासद लोकक सम्मोहि बोल ।

श्लोक

भो भोः सामाजिका ईश कृष्णस्य जगतीपतेः ।
श्रीपारिजातहरणं यावा सम्पत्तिं पश्यत ॥

अथ भलिमा !

जय जय कृष्णदेव निज अंश । लीला नाशित कंश एवंश ॥
जाकेरि चरिष भक्त-अवतंश । कमल केलि कमल कलहंश ॥
तनु इन्दिर श्यामल चोरि । तथि परकाशित पीत पिचोरि ॥
तद्धित जद्धित यच नव घनखंड । मकरि कुण्डल मंडित मंड ॥
कनक किरौटि खान अवमास । कुंचित चारु चिकुर परकाश ॥
चधिकर कर्ण भुवन मन भूल । नासा नील रतन तिल फूल ॥

१५३

नयन कमल मुह-पंकज जोड़ । एहु मिलल जच चान्द जकोर ॥
मानिक दशन हाथा तथि थोर । आरकत अघर वन्दुलि बचि चोर ॥
बचिर चिचुक भेलि हृद ताप । भू-युग गात्री मदनकेरि चाप ॥
कुटिल अलक कुल तिलक कपोल । हृदये हेमक हार अमोल ॥
आत्थि मतिम माया लुले । कोख भु-कंड मह दुले ॥
चार उदर दर हृदय विशाल । लम्बित पंचवरण घनमाल ॥
संचर चंचर मधुकर लोहे । श्रीश्रीवल उरस्थल सोहे ॥
चार चतुरभुज अंश भुअंग । रतन केडर उजोर तनु संग ॥
कंधण कनक कनक कव-मूल । करतल राता उतपल फूल ॥
अंगुलि चार हीर हेम मोती । नखमणि निगदित चौंदक जौति ॥
अरि अरकिंद कौमुदी कम्बु पाणि । कोकिल-कंड अमिया भुरे घाणी ॥
नाभि कंज रंज अतुपम । विहिको जनम भेलि सोहि ठाम ॥
कटित कनक कौंती परिभ । उर करिकवर मरकत तम्भ ॥
लम्बि नितम्ब पीत बचि चिर । पद-पंकज भुरे रतन मंजीर ॥
नील आंगुलि वच चरपक कोर । नखचय चारु चांद उजोर ॥
कमल पदतल अलकल भान्ति । सज पंकज यव अंकुश कान्ति ॥
पाशा लासा सेह चामर ढोल । संचर राजहंस दुहो कोल ॥
माथे छत्र चारु शशीकांत । वरिसे सिकर आमिया नितान्त ॥
मधुह मुचवि भक्त मनपुर । मनमथ कोटि जाहे नहि तुर ॥
होइ जय नील नव घनखंड । उयरे रह रधिकर परचंड ॥
पूर्णमाक चांद दुहो दुहो पाशा । तथि कव इन्द्रजाप परकाशा ॥
बहे दुहो धार सुरसरि नीर । उजरि विजुरि रह तथि धिर ॥
अभिनव सूर उगत तनु माके । ताहे छवि यक-पकति धिराजे ॥
तारा भिकमिक कव बहु ठामा । तव होइ सोइ मुहति उपमा ॥
रहु हृदिपंकज सोहि मुरारि । अब सोइ सोइ देखु विचारि ॥
कोटि कल्पतक पूरण कामा । ऐचन ईश रह निज ठामा ॥

ताहि चरण चित्त चित्त लाइ । शत्रु चिंतामणि विरुलेहि जाइ ॥
आये निकट नित अन्तक गरजि । लेहु हरि-चरण शरण सब वरजि ॥
जो मुंहे राम नाम ताहि अंशे । कलियुग काल भुजंगम दंशे ॥
सोहि कुण्ठक नाटक उषामा । पारिजात हरण आहे नामा ॥
भक्तिक साधि सुनइ सब लोइ । हरि द्विजे शान्धव आन नाहि कोई ।
कुण्ठ किंकर ओहि शंकरे बोल । कर अब नरसब हरि हरि रोल ॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, जे जगतक गुरु, जाहेरि खजना सगळा संसार, ब्रह्म, महेश, बन्धित पाद-पद्म, परम पुरुष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण रुक्मिणी सखामा सहित ओहि सभा मध्ये प्रवेशि कहो नरकासुर वध पारिजात हरण लीला यात्रा कौतुके करव ताहे सावधाने देखइ सुनइ आतपरेपुण्य कलित नाहि नाहि । जानि निरन्तरे हरि बोल । तदन्तर गूढ पुछत । आहे संगि, कि वाद्य वाजे ।

संगी बोल । आहे देववाद्य वाजत ।

सूत्र०—अः मिलल मिलल ।

श्लोक

प्रवेशमकरोद्देवो गोविन्दो गङ्गासनः ।

रुक्मिणी सख्यभामाभ्यां सह चारुचतुर्भुजः ॥

कथा—आहे लोक, हासु जे कहलु सोहि परमेश्वर श्रीकृष्ण सभार्जे यात्रा निमित्ते एथा आकाश । परम सावधान हुया ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।
इति सूत्र निष्क्रान्तः ।

प्रवेश गीत

राग लिङ्गुरा—एकताल ।

ध्रु०—अये गङ्ग-केतु कपो परवेश ।

मदनक लाज हेरि रूप लेश ॥

पद—श्याम नुरति दीप्ति पितवासा । मुकुट कुण्डल मणि मुख परकाशा ॥
कर कंकण कमाला उरे लोले । चरण माकें मनीर कद रोले ॥
कौदि मदन जिन उअर मुरारि । संगे सख्यभामा रुक्मिणी वर नारी ॥
शरीरक जोति जल्य दिश पाश । कहय शंकर हरिदासकु दास ॥

सूत्र०—आहे सभासद लोक, श्रीकृष्ण पत्नी सख सहित कौतुके हल रूप कहो रुक्मिणी सहित एक मन्दिर रहल । सख्यभामा निज मन्दिरे रहल ।

श्लोक

पदपात पुरन्दरो देवो नारदेन सहायतः ।

प्रणम्य केशवं सर्व प्रोवाच भौम चेष्टितम् ॥

सूत्र०—तदन्तर, देवता इन्द्र नारद सहित आसि कहूँ श्रीकृष्णक विरे परनाम कथ कहूँ नरकासुरक विशेषता जैसे निवेदल । नारद आशीर्वाद कथ श्रीकृष्णक हाते जैसे पारिजात निवेदल । रुक्मिणीक साथे जगतक साथे जैसे पिन्नाथल आहे लोक, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग आशोचरि—परिताल ।

ध्रु०—अइरावत कथे वासव आवे ।

आगहि नारद हरि गुण गावे ॥

पद—सुन्दरी रमणी शची एकुपादो । चले भ्रूभंग अंग लभलासे ॥

माथे छत्र वज्र एकु हाथे । कह शंकर गति गोपिनी नाथे ॥

सूत्र०—तदन्तर नारदक देखि श्रीकृष्ण सभार्जे उठि कहूँ सपटे प्रणाम कयल । नारद हात तोलि चिरंजीव चिरंजीव बुलि आशीर्वाद श्लोक पढ़ल ।

श्लोक

अयमय ददुदेवो देवकीनन्दनस्तम् ।

भुवनपति समस्तैरर्चिताब्जः सदैव ।

निजजनभयडारिन् सृष्टिसंहारकारिन् ।

असुरनरकतन्तान् सप्रतप्तं पाहि देवान् ॥

कथा—ओहि आशीर्वाद कथे श्रीकृष्णक हाते पारिजात दिशे नारद ताहेक महिमा कहल ।

नारद—हे कुण्ठ, ओहि पारिजातक गंध तीनि महरेक वध जाइ । ओहि पारिजात जाहेर रहे रहे धनजन विभव वाढवे नाहि । ओहि देवदुर्लभ पारिजात जो

तारि परिधान करे, से पुण्य महिमाये परम सीमागिनी हव । ताहेक चारि
चारी स्वामी कथाये जाये नाहि । अः ओहि कुसुमक महिमा कि कहव ?

सूत्र०—ओहि बुलि नारद चोवहि पारि बैठि मौन रहल ।

श्लोक

श्रुत्वा कुसुम-माहात्म्यं रुक्मिणी केदावश्रिया ।

प्रणम्य स्वामीचरणं पारिजातमयाचत ॥

कथा—मुनिक मुखे कुसुमक महिमा सुनि रुक्मिणी परम कौतुके कृष्णक गौरि लागि
करजोरि बोलल ।

रुक्मिणी—हे स्वामी हामी तोहार प्रथम पतनी जानि ओहि देवदुर्लभ पारिजात
प्राणनाथ हामाक देहु ।

सूत्र०—ओहि बोलि जैसे कुसुम मालल ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग श्रीगन्धार—जातिमान ।

श्रु०—कौतुके रुक्मिणी ; नमिजे स्वामीक पाये

मागे आङ्गुरि भरि हात ।

आहे पिड,

अथ प्राणनाथ माये मिलावो मोहि

ओहि कुसुम पारिजात ॥

पद—आहेर गुण सुनि मुनि मुखे माधव

साधु अतये सोयी मान ।

भक्त कृपाल छागु चरण लेरि

करहु कुसुम मोहि दान ॥

तोहारि प्रथम पतनी परम स्वामी

जानि पूरह मोहि आशा ।

धनीक वाली सुनि हासे रसिक हरि

कहेगु शंकर कृष्ण दास ॥श्रु॥

सूत्र०—तदनन्तर रुक्मिणीक अति कातर वाली सुनि श्रीकृष्ण हौंसि हौंसि हाते तोलि
पुयाक गौरवे कले वेडाइ कौतुके जगतक नाथे माये पारिजात पिन्हावल ।
रमणीक बाँछा सकल भेल । तदनन्तरे पुया सहित श्रीकृष्ण सादरे नारदक
वार्ता पूछत ।

कृष्ण—हे मुनिराज, तोहों कुशलै आवल । अः तोहारि आगमने आहु हमार द्वारिका-
पुरी पवित्र भेल । तोहारि दर्शने हामु कृतार्थ भेल्लें ।

श्लोक

कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा विहस्योवाच नारदः ।

निजभृत्यसर्वेषां मयि मायां करोषि किम् ॥

नारद—हे स्वामी कृष्ण, मनुष्य-चेष्टा देखाया सबलोक मोहिल ; तोहाक ईश्वर बोलि
जानये नाहि । हामु तोहारि भक्तिकवले लव जानि, हामाकु मोहिते चाव ।
अः स्वामी सुनह ।

पदाङ्क—हे परमेश्वर जगत निवासा । हामु नारद तूआ दासकु दासा ॥

भरमो विश दश तुषा वध गाथा । हामाकु आगु करसि ओहि माया ॥

जगत उछार जाहेर चरित्र । ताहेक हामु कयल पवित्र ॥

जाहेर नामे सुकुलि-पद पाइ । सो हरि कर श्रुति नति कतिब्यह ॥

तुहँ जगत - गुण - देवक देवा । तोहारि चरणे रहोक सेवा ॥

मुखे जोनो न चारहु तुषा गुण नाम । मागु अतये भर तोहारि ठाम ॥

नारद—हे कृष्ण, तुहँ परमपुरुष, नारायण भूमिक सार हरण निमित्ते अवतरिल ।
साम्प्रत पापी नरकामुरे देवतासभक बहुत दुःख लागवे । तन्निमित्त पापी सहित
इन्द्रदेवता तोहारि चरणे शरण लेलहक ; हे श्रीकृष्ण देखो देखो ।

सूत्र०—ओहि बोलि नारद मौन रहल । तदनन्तर श्रीकृष्णक आगु परि पुरन्दर परनाम
कये कहँ, समार्ये करसुरि श्रुति बोलल । ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

पदाङ्क—जय जय सादव देव । जय धाता-कृत सेव ॥

जय भक्त भव हाथी । जय जय ईश्वर मुरारी ॥

आकेरि नाम उचारि । पाइ प्रदाम चारि ॥

जीव निवन्ता तुहुँ अज । बन्धो तुआ चरण-पंकज ॥
अघक्क बैनुक कंस । मारल अमुर सवंस ॥
हरलि भूमिकेरि भार । भक्तक हेतु अवतार ॥
साम्प्रत गोचर हमारि । बान्धव छुनह मुरारि ॥
अब नरकासुर पाप । कयलि बरि उपताप ॥
आमल स्वर्गक मारि । देयक अतये कुमारी ॥
सर्वस्व नारदे हमारि । तुया पावे कयछु गोहारि ॥

पुरन्दर—हे स्वामी कृष्ण, पापी नरकासुरे कोन न करल ? वरुणक छत्र, मणि पर्वत,
ए सब काहि आनल । हे कृष्ण कि कइव ! मातृ अदितिक कुन्दल दोहों
राखवे नाहि पारल । आर हमार हैइते कि रहल ? हे कृष्ण, कौटिकौटि
ब्रह्माण्डेश्वर तोहारि चरण चोरि हमार गति नाहि । बाप जगन्नाथ, चाहि नाहि ।

सूत्र०—ओहि बोलि कृष्ण आगु कान्हि कान्हि पुरन्दर लुटि परल ।

श्लोक

दृष्ट्वा दुःखं महेन्द्रस्य श्रुत्वा च भीमचेदितम् ।

आश्वास्य ब्राह्मवं हस्ते गृहीत्वोवाच केशवः ॥

सूत्र०—तदन्तर महेन्द्रक दुःख देखिये, परम कृपामय नारायण हाते बरि तोलि इन्द्रक
आश्वासि बोलल ।

कृष्ण—हे महेन्द्र, तोहों ताप तेजह । तोहारि बेरी पापी नरकासुर, से गतासु भेल ।
ताहें मारि देवता-प्रयोजन सत्वरें साधव । अहि निष्टे जानि तुहु आनन्द हुवा
सत्वरें अग्रावती चलह । नरकासुर बधिते हामु आजु पथान करव ।

सूत्र०—से समये नारद आसि कहूँ इन्द्रक बोल ।

नारद—हे पुरन्दर, श्रीकृष्ण जेखन अंगीकार कयल तोहार शत्रुक सेखने कन्धपात भेल ।
इहात शंका नाहि, तुहुँ आगु हुवा चलह । तोहाक निमित्ते श्रीकृष्णक कातर
कय हामु पाचु लया जावव । चिन्ता नाहि, चलह ।

सूत्र०—ओहि निर्मग वाणी श्रुनि ब्राह्म श्रीकृष्ण नारदक प्रदक्षिण करि कहूँ परि परणाम
कयल । भिदाय लैया ऐरावते चरि इन्द्र चलल ।

श्लोक

मुनिर्माधवमाहेदं गन्तुं त्वरय केशव ।

द्वारवत्याः शिष्यं पश्यन्नेष्यामि चान्तिकन्तम् ॥

नारद—हे कृष्ण तुहुँ चलिवाक सत्वरें साजह, हामु तोहारि द्वारकापुरीक कौतुके देखिये
ऐरावतने आवव ।

सूत्र०—ओहि बलि नारद हरि गुण गाइ जैसे चललि ताहे देखह छुनह । निरन्तर
हरि बोल ।

पद्याइ

श्रीगान्धार राग—परिताल ।

ध्र०—चललि नारद हरि गुण गाइ । भरमे द्वारकापुरी सम्पत्ति जाइ ॥

पद—रतने रचित यत हरिक आवासा । जेछे सुरपुर कर परकाशा ॥

देखल पाछु भुवन अनुपमा । आखने थिक भेटि सत्यभामा ॥

पूर्णमाक चौद धरन परकाशा । चिरंजीव बोलि नारद कव हास ॥

देखि मुनिक धनी अचनत काइ । परि परणाम कयलि पुन माइ ॥

जीवतु जीवतु नारद बोल । डाकि करहु नर हरि-हरि बोल ॥

सूत्र०—तदन्तर हामुवा चयडि पारल । मुनि आसन भिडि तथि बैठल ।

श्लोक

नारदः सादरं देवीं सम्बोध्याह हरिप्रिया ।

कृष्णस्य कर्मविषयं सत्यभामे निबोध मे ॥

नारद—अः हे देवी सत्यभामा, तोहारि स्वामी श्रीकृष्णक बड़ि बिसम चेष्टा देखल ।

हा हा माय, तुहुँ तुर्भागा भेलीह । हामु आजु से जानहु ।

सत्यभामा—हे मुनिराज, तुहुँ कि कह्यौछ ? हामु किनु बुझये नाहि ।

नारद—हा हा तोहाक विधि बंचल । हे माय, कि कह्य ? कहिते यद कुल लागए ।

सूत्र०—ओहि बोलि बैठ माये ठेस कय रहल मुनि ।

श्लोक

सत्यभामाभवाद्गीता निशम्य मुनिभाषितम् ।

दृष्टं कथय किं कुत्र तं पुच्छति पुनः पुनः ॥

कथा—शुनि भीत हया देवी: करयुद्धि बोलल ।

सत्यभामा—हे मुनिराज, हामु जानु मोह सम सौभागिनी आवरि नाहि । से स्वामी कृष्ण हामाक चाडि कतिहु जावे नाहि । तुहु आनु कोनो ठाने कि देखल कि छुनल ! हामाक जपत, सखरे स्वरूप बात कह । चित्त हरि उदवेग करये, मुनि मीन चाडह ।

श्लोक

दृष्ट्वा देव्याः मुनिर्वन्धं कथयामास सादरम् ।

कृष्णस्य चरितं सर्वं वदन्निव स नारदः ॥

सूत्र०—देवीक निर्वन्ध देखि मुनि बोल ।

नारद—हा हा माय, कि कहव ? ये सब कथा कहिते दोष । हामु रेव दुर्लभ पारिजात पुष्प स्वर्ग हन्ते आनि कृष्णक हाते देलौ । से पारिजात जे नारी परिधान करे, से पुष्पक मरिमाये परम सौभागिनी हय । इहा जानि हामु बोललु, ओहि पारिजातक जोग्य देवी सत्यभामा । तथि कृष्णे कयलि कि ! तोहाक कटाक्ष करिये आपुन हाते पुया रुक्मिणीक माथे परम सखरे से दिव्य पारिजात भिन्वावल । आः तोहाक जीवनक धिक धिक ! सखिनीके अम्युदय देखि कि निमित्ते प्राण धरह ! माता तुहुं जीवनते मरल ; हा हा विस्तर कि कहव ॥

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य शोककोपपरिच्छुता ।

मूर्च्छिता पतिता भूमौ यथा वाताहता लता ॥

सूत्र०—तदनन्तर नारद मुखे सतिनीक महोदय शुनि कहुं कोपे अपमाने आग्वारि देखिबे देवी सत्यभामा मूर्च्छित हया पड़ल । जेथे ल्यंगलताक बाते उपारल, तहत ! केश मुक्त भेल, मुखे वचन हरल, नासत प्राणवायु नाहि लेले । पेलि सखि इन्दुमती हा हा प्राण सखि मरल बुलि बाहुं भेलि धरि कहुं शिरे जल सिंचल । आँचोले चिचि कान्दि कान्दि प्रबोध बोलल ।

इन्दुमती—हे प्राण-सखि, सतिनीक अपमाने कि मरिते जाव ? ओहि कोन व्यवहार ? आः से प्राण माधव स्वामी तोहारि मान साधव नाहि ओहि दुर्जना चिन्ता

परिहरि उठह उठह ।

श्लोक

कथंचिद् चेतनं सा लब्धा देवी पुनः पुनः ।

विनिश्चयस्यापमानेन हरोद सखीसन्निधौ ॥

कथा—ते देवी सत्यभामा कथंचित् चेतन लभिये बन बन निश्चाल कोकारि जेछे संताप कयले ताहे देखह छुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग कल्याण—जतिताल ।

सूत्र०—मानिनि माह : नयन पंकज बुरे आरि ।

कोकारये श्वाला, हासा भेलि देहा,

बन बन देखो आन्ध्रवारि ॥

पद—सतिनीक उदये दृश्ये दृष्टे आसि

अधिक मिलये मन तापे ।

धिक अवजीवन दीवन मोहे अभागि

रागिनी करल बिलापे ॥

हरि हरि पीछु भेरि बेरी अधिक भेलि

अतबे कयलि अपमाना ।

धरणी छुटि छुटि बिलपति बाला

कृष्ण किकरे रसभाना ॥

सूत्र०—देवी सत्यभामा, ओहि सकल बिलाप-अपमान कये धिक तदन्तर कलह भिय नारद पुनश्चरि कृष्णक आगु गिया जे बोलल ताहे छुनह ।

नारद—आहे श्रीकृष्ण तुहुं पथा कोन तुलें रहइल ? से पुया सत्यभामा पारिजातक निमित्ते अपमाने अन्नपान सब चाडल, परम तापे मरबिछे । हा हा नशुनये देखिते कि पाव कि नाहि पाव । देव, सखरे जाव ।

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य माधवो भक्तवान्धवः ।

द्रुतं तस्या गृहं प्रागात् प्रियायाः प्रेमविद्धलः ॥

सूत्र०—मुनि मुखे पुयाक दुख शुनि श्रीकृष्ण प्रेमविह्वल हुआ मुनि क कातर करि कहु
आत पुछि जेछे सत्यभामाक समीप चलल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग गुझा—जतिमान ।

प्र०—मुनि कहियो कहियो कपट परिहरि ।
प्राणै कि जीयय मोर गुणेर सुन्दरि ॥

पद—मानिनी न सहै तिलेको अपमान । मेरि अपराधे कैछे धरव प्राण ॥
पुयाक सन्तापे तापे दहे शोक आगि । कुसुम ना दिया भेलो तिरी रघ भागि ॥
जुझावते नयन पुयाक पाइल कोल । देखि आकुल कृष्ण किशोर बोल ॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण प्रेमे विह्वल हुआ पुयाक देखल, छोटके मुख मलिन । घन घन निश्वासा
कोकारि माटि लुटि रह । ताहे देखि श्रीकृष्ण हा हा कि भेलि ओलि आंको
आलि धरल । नयनक नीरे भुरावे, आश्वासि बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, मोटा एक फूल रुकमिणीक देखो । से निमित्ते यदि अपमान करह,
तबे उठह तोहाक एक शत पारिजात देवव । रुकमिणी, जाम्बवती तोहाक
सम सौभागिनी हवे नाहि । तोह हामाक प्राण सन पुया जानि ताप तेजह ।
तोहारि दुख देखि हामार हृदयमे सहसे नाहि । पुये हामाक शपत उठह उठह ।

श्लोक

प्रियं प्रणयकोपेन निःश्वस्य हतः सती ।
धूर्त्वा तपैः दुर्भगां मां किमर्थं त्वन्विकश्यसे ॥

सूत्र०—तदन्तर कृष्णक वाक्य शुनि देवी सत्यभामा स्वामीक पिठि दिवै कहौ हेठ माथ
सकास्य कन्दन कये बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामि दुभागक कपट वाक्ये कत कदर्थना करह ? ये तोहार
मुपलमा ताहेक समीप चलह । हामाक कोन प्रयोजन थिक ।

सूत्र०—ओहि ओलि बहुत विलाप कये कृष्णक ये बोलल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे
हरि बोल ॥

गीत

राग श्रीगन्धार—जतिताल ।

प्र०—केशव हे बुझलहुँ तुहुँ, जानलोहो तोहो व्यवहार ।
अतवे चातुरि चोरि चलहु बहुरि हरिण ।
याहा पुया रमणी तोहारा ॥

पद—तोहारि कपट कृष्ण नासुकि मानलो हामु ए
नाहि सौभागिनी सम मोह ।

देखन पीरिति रीति सगहि विदित भेलिरे
आसु जानलों मति तोह ॥

ओहि अपमाने प्राण नाहि धरव हामुरे
बोझल जीवनक आशा ।

आसु पिउक पदि धहु विलपति बाला रे
कहतु शंकर हरिदासा ॥

सत्यभामा—हे स्वामी हम तुमंगा । सतिनीक अधीन तुहु, हामाक कतये विकर्षना
करह ? ओहि अपमाने हामु प्राण राखव ? आह सत्र हामाक जीवनक
धिक धिक ।

सूत्र०—ओहि ओलि देवी कान्दि कान्दि मूर्च्छित हुआ पड़ल ।

श्लोक

कुर्वन् हाहारं रामा मालिन्याकुलमानसः ।

प्रियवाक्येषु तां शान्तिं सत्यभामास माधवः ॥

सूत्र०—ताहे देखि श्रीकृष्ण हा हा ओलि बाहु मेलि धरल । पुयाक मुख देखिवे मरम
चढ़ल । कमलनयनक नीर भुरावे, प्रेमे प्रमोद बोलल ।

पदाङ्क—पुयाक मुख देखि न सहै शरीर । कमल नयन भरि भुरि बहे नीर ॥
आलिनि पुयाक लापि धरि कोल । करि आश्वासा वचन हरि बोल ॥

हे हे प्राण-पुया शुन बात । देखहु नाहि तोहो पारिजात ॥

अत अपराध सग्व अव मोहि । तुया सम सौभागिनी नाहि कोइ ॥

रुक्मिणीक बेल मोटाव एक फूल । ताहेक लागि तुहुँ अतवे आकुल ॥
 पारिजात तक समूल उबारि । रोपन करव आनि पुषा बाडि ॥
 थव मोहि बाक्य नाहि पतिआवा । कहलु सत्य सत्य गुन जाया ॥
 अब तेनहु ताव कुमारि । न सहै हरि तुख देखि तोहारि ॥
 हामाकु शपत खेडलहु माथे । उठह उठह पुषा डेरि, थर हाते ॥
 कर काकूति नति जगत रईस । रमणिक मने किछी मिलल हरीष ॥
 परम ईश्वर कर कातर पुषाक । देखु अद्भुत भक्ति महिमाक ॥
 ब्रह्मा महेशक याक कर सेवा । माथे खेड मड़ोल सहि देवा ॥
 कृष्णक लीला बुझये नाहि पारी । पूर्ण काम हरि कि करव नारी ॥
 मकलि कयलि हरिक मन मोल । जानि करह नर हरि हरि रोल ॥

सूत्र०—तदनन्तर सखि इन्दुमती बोले ।

इन्दुमती—हे प्राण सखि, परम ईश्वर तोहारि स्वामी माथे खेड थर अतवे कातर
 करेछे ? आर कोन मान साधिते रहल ? सखि ताव तेजह, उठह उठह ।

सूत्र०—देवी स्वामीक अतवे विनय बाणी सुनि कहूँ किञ्चित् चित्त शान्त भेल ।
 श्रीकृष्ण ताहे देखि आलिंगि सोलि बेटावल । पीत वस्त्रे शरीरक धूलि भाङ्गल,
 केदा बाण्डल, निज हस्ते कम्पुल-ताम्बुल भुंजावल ।

श्लोक

ततो देवी सत्यभामा कृष्णवाक्यामुतेन सा ।

प्रीता प्रसन्नवदना प्रणम्याह प्रियं हरिम् ॥

सूत्र०—देवी स्वामीत महामान लभिये आलि प्रसन्नमुखी हवा श्रीकृष्णक प्रणामि बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी हामाक पारिजात तक दिते तुहुँ सत्य कवल जानि बिलम्ब चोड़ि
 ऐखने आनिवा देव । जाथे पारिजात नाहि देखु ताथे पारी प्रवेश नाहि,
 हामु सत्य कवे बोललु ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, पापी नरकागुरे देवता सबक जिनिथे सर्वस्व आनल । आगु ताहे
 मारि देव कार्य साधो, पाबु पारिजात आनो ।

देवी—अः स्वामी उचित कहल, आगु देव कार्य साधि सोहि बाधाए पारिजात आनह,
 हामु तोहार संगे चलव ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, तुहुँ स्त्री जाति, मुझक समने तोहारि गमन उचित नहे ।

देवी—हे स्वामी, हामार बहुत सतिनी, इबार पारिजात आनि कोन स्त्रीक देवस ताहे
 बुझये नाहि । हामु कदाचितो तोहारि संग नाहि चारव ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, तुहुँ यदि हामार संगे चलव तब सत्तरे राजह ।

श्लोक

कृष्णमभ्येत्य भगवान् जगद् नारदस्तथा ।

ज्ञातं किल भवान् भार्याभक्ति-सक्तोऽहसि केशव ॥

कथा—नारद चक्रोद्यमाह ।

नारद—हे कृष्ण, जानल तुहुँ स्त्रीक लाडिका । देवकार्य सब परि रहल, तोहार भार्याक
 पातु बुझिते सब दिवस गेल ।

श्रीकृष्ण—हे मुनिराज, स्त्री बुझये से नाहुके । कि करव ? कुमारिक हात ऐडाइते
 पारये नाहि । हे मुनिराज, ऐ चलइछे । क्रोध नाहि करबि ।

सूत्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण अति सत्तरे बाधा कय चलल ।

श्लोक

सहस्रमकरोत् कृष्णः प्रयाणं प्रियया सह ।

धनुषंकारघोरेण दश दिशिः प्रकम्पयन् ॥

कथा—श्रीकृष्ण धनुषंकरे दशदिश कम्पाइ पुषा सहित नेछे पहान कयल ताहे देखह
 झनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग माउर घनश्री—एकताल ।

सूत्र०—कयलि परान सदुराह । करे सारंग संगे पुषा चलि जाइ ॥

पद—श्यामल अंग सुरंग पीतवासा । धिजुरी उज्जल नय वन परकाशा ॥

अवण चरण मंजीर कद रोल । ताहे मजोक मन शंकरे बोल ॥

कथा—श्रीकृष्ण ओही प्रकारे विया सहित प्रयाने चलछे । से समये नारद आलि बोल ।

नारद—हे हरे, तोहो सम स्त्रीजीत पुरुष कह्यो ना देखि । युद्धक समये स्त्रीक चोरये नाहि पार । तुष्टु नगतगुरु तोडाक जस ताइ शीनिषो लोकक बेदाये, अः हामाक लाज मेल ।

कृष्ण—हे मुनिराज कि करव, पारिजात निमित्तो सत्यभामा प्राण चाहय, उनिकर निर्वन्ध कत सहयो ।

नारद—हे कृष्ण, कामासुर पुरुषक ऐछन अवस्था । स्त्री जे आशा करे, से अवश्ये करिते लाये । से होक, से कामरूप नरकासुरक पाट, ओहि द्वारका हुन्ते स्वभावे मास चारिक पथ । स्त्री लगा चाहिते बखर दुइ चारि पावव । अः देवकार्य भल्ल सखे साधल । एक कर्म करइ, तोडाक बाहन गरुड पक्षिराज ताहेक आश करइ । ताहरे स्कंधे चढ़िये सखर नरकासुरक मारइ ।

सुन०—मुनिक वाणी सुनि श्रीकृष्ण पृथाक बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, मनि भल्ल कहल ।

देवी—हे स्वामी, हाभितो पावे हाटिते पारये नाहि । ता मुनि श्रीकृष्ण वाहनक स्मरल । आइ गरुड पक्षिराज, सखरे आव सखरे आव ।

श्लोक

आहन्नागत्य गरुडो नत्वा कृष्णं कूर्ताजलिः ।

मम स्कंधं समाकृत्वा जहि भीमं दूराश्रयम् ॥

कथा—गरुड बोल । हे स्वामी, हासु थाकिते तोहो पावे बेदायब ! अः हामार स्कंधे चढ़ि पापी नरकासुर बध गिवा ।

तदनन्तर श्रीकृष्ण सभायें गरुड कंधे चढ़ि परम लीलासे चलल ।

श्लोक

प्राञ्ज्योत्तिष्ठं सोऽस्ति जयैव जायया

सुवर्णमाकृत्वा ययौ जनार्दनः ।

क्षणेन सम्प्राप्य पुरं परेशो

महोत्सवो शंखरथं चकार ॥

कथा—श्रीकृष्ण गरुड बाहने वासुदेवो कामरूप पाइ पांचजन्य धुनि कयल । ताहे सुनि नरकासुर खेदि आवल, श्रीकृष्ण बैछे बध कयल, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

पवाद—राम कानइ ।

चललि गोविन्द गरुडक कंधे । नरक मारिते कयलि प्रबन्धे ॥

वासुक वेगे चलि पक्षिराज । तिलेके पावल कामरूपराज ॥

हुंकल शंख हरि बारे बारे । सुनि शत्रुक भेल हृदय विदारे ॥

जानलु आवल माधव पाइ । गरजे दानव युद्धक लाइ ॥

समरक साजि बजावण होल । भर धर मार मार करे शत्रुरोल ॥

धावे मुर नरकासुर रागि । खाण्डा पिकावय कृष्णक लागि ॥

हरि टंकारल सारंग भिड़ि । बरिधिल साय दैव कह्यो पीड़ि ॥

कावल प्राहु कंधे कर शिर । मारल हरि सख दानव वीर ।

पैखि पलावत दानव असुर । बाण प्रहारिये मोरछ मुर ॥

कोपे चक्र खेपि जगदाध । काटल दाखन नरक माध ॥

देखि देवक असव बहुर । बाजे तुन्दमि बरिणय फूल ॥

जय जय वादय करे बहु बोल । सामाजिक सब हरि हरि बोल ॥

सुन०—से मुर नरकक मारि कह्यो श्रीकृष्ण यश साधल । देखि देव सब आनन्दे तुन्दमि बाजाइ । जय कृष्ण जय बोलि छिरे कुसुम बरिणयल । श्रीकृष्ण सभायें आनन्दे रहल ।

श्लोक

ततो वसुमती पौत्रं पुरः स्थाप्य हस्ताम्बुजा ।

विलयन्ति तदा कृष्ण नत्वा प्रोवाच दुःखिता ॥

वसुमती—नरकदुन बध भेल देखि वसुमती परम गन्ताये ताहेक पुत्र भगवत शिशुक आग कय कह्यो कृष्ण दर्शन निमित्तो बैछे चलल, आइ लोक ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राम माउर धनश्री—एकतालि ।

ब्र०—पिउक समीप चले माइ, हरिदरशन चले माइ ।

शिष्ट समे वसुमती लहु लहु रति पाइ ॥

पद—सुतक संतापे तनु भेलि हासा । छोटके छेपित मुख फोकारे निश्वासा ॥

स्वामीक कह पावे परि परणाम । कहनु शंकर गति मेरि राम ॥

कथा—ऐचन शिष्ट समे वसुमती आसि कहुं श्रीकृष्णक परि परणामि कर जोड़ि बोलल ।

वसुमती—हे स्वामी श्रीकृष्ण, कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर परम पुरुष पुरुषोत्तम तुहुं जगत्-गुरु । तोहाक द्रोह करि पापीपुत्र नरक निज पावे नाश भेल । तोहाक पुत्र ओहि शिष्ट भगदत्त नातिक तोहार पावे, समर्पल । आहेंकर रक्षा करह ; हमार सन्तति रहोक । तोहारि चरण पंकजे कातर कये अतवे प्रसाद मागु गोसाइ ।

ब्र०—ओहि ओलि वसुमती, बहुत बिलाप श्रीकृष्णक आगु कयल । ऐछन कहना वाणी शुनि नारायण वसुमतीक आश्वास कय बोलल ।

श्रीकृष्ण—आहे वसुमती, तोहो ताप तेजह ; तोहारि पुत्र नरकासुर भूमिक भार भेलि । से निमित्तो इहाक मारि तोहार भार दूर कयल । तोहारि वचने ओहि भगदत्त शिष्टक कामरूप पाटे राजा पाटय, तुहो चिन्ता नाहि करव ।

ब्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण वसुमतीक आलिंगि आश्वासिये अन्तपुर प्रवेशि कहो भगदत्तक राज्य अभिके कयल । थोडश हजार कन्या तोहरे वारीत पाइ द्वारकापुर पठावल, अदितिक कुण्डल, वस्त्रक लत्र, मणि पर्वत लोया, गरुडक कन्वे सत्यभामा समे स्वर्गक कौतुके चलल ।

श्लोक

ततः सन्निकटं दृष्ट्वा स्वर्गे कृष्णो मुदायुतः ।

वभूमी शंखं पांचजन्यं हर्षयन्निदिवि देवताः ॥

ब्र०—मूर नरकासुर मारि श्रीकृष्ण स्वर्ग समीप पाइ परमानन्दे शंखध्वनि कयल ।

ध्वनि शुनि जानल देवता सब, अः हमार स्वर्गक खासि श्रीकृष्ण आबल ।

परम हरिने जय जय कोलि तुन्हुमि बजाइ धिरे कुसुम बरिपिल । ताहे पेलि सत्यभामा पिउत पृष्ठत ।

सत्यभामा—आहे स्वामी, ओहि कोन स्थाने पावल हामु ? जे तुन्हुमि बाजइ कुसुम बरिपे ऐ सब के ? हामाकु परिचय कराव ।

श्लोक

कृष्णः प्राह प्रियां पश्य इमान्भावतीपुरीम् ।

आगता देवता एतावता मां देवी दिदृक्षवा ॥

कृष्ण—हे देवी, तुहुं नाहि जानह, ओहि अनरावलीपुरी, एहि देवता सब हामाक देखिते आबल, देखो ओहि ऐरावत कन्वे वासव भिक । उनिकर महादेवी ओहि शची, ऐसब दिग्पाल, सिद्ध विद्याधर ।

देवी—हे स्वामी, जे विमानक उपरे प्रकाश करैछे ओहि कोन वृक्ष ?

कृष्ण—हे पुये, नाहि जानह ? जाहेर निमित्तो मामिनी होइछे से पारिजात तह ओहि ।

देवी—(हर्षमाइ) अः हमार मनोरथ साफल भेल । ओहि पारिजात पुष्प भरिने सतिनीसत्रक माजे लासवेश करि बेड़ावव । हे स्वामी तत्वर करो ।

श्लोक

ततोऽपि कौतुकं दृष्ट्वा इन्द्र आगत्य सादरम् ।

दोर्भां देवं परित्यज्य जगद मधुरं वचः ॥

ब्र०—तदनन्तर इन्द्र आसि कहुं गौरवे कृष्णक धरल शची सत्यभामाक आलिंगि सत्कार कयल ।

इन्द्र—हे कृष्ण, पापी नरकासुरक मारि हामाक कृतार्थ कयल । बार बार तुहुं उडार करह । तोहाक गुण सुभवे नाहि पारि ।

ब्र०—ओहि बुलि प्रेमलोटक भुरखे इन्द्र मीने रखल ।

श्लोक

अदितिं मातरं पश्यन् सभायौ जगदीश्वर ।

प्रणम्य देवमायेहदादमृतस्नानिकुण्डले ॥

कथा—तदनन्तर श्रीकृष्ण इन्द्र सहित अदिति मातृक प्रणाम कचे कहुँ अमृत कुण्डल दोहो निवेदल । शची सहित सत्यभामा अदिति शाशुक जातुबारि प्रणाम कयल ।

श्लोक

ततः सा देवजननी कुर्वा भूत्वा महेश्वरम् ।

वद्वान्जलिः जगन्नाथं सुतौ देवि मनोदधे ॥

कथा—अदिति श्रीकृष्णक परम ईश्वर जानिये बेछे तुति आरम्भल ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ॥

पद्याङ्क

जय जय जगत-निवासा । जय जय असुर विनाशा ॥
जय छेदक भय पाशा । जय तारक निज पाशा ॥
जय जय ईश्वर सुरारि । जय जय असुर संहारि ॥
जय जय सारंग - धारी । जय जय ब्रह्म अधिकारी ॥
जय जय जगतक धाता । जय जय पातक धाता ॥
जय जय भूतक धाता । जय जय मुक्ति दाता ॥
जय जय यादव रामा । जय जलधर तनु-स्थामा ॥
जय जय पूरण मनकाम । जय भयतारक नाम ॥
कह कछना सद्गुण । लेलौ शरण तुवा पाह ॥
परम पुरुष कह नाणा । तुवा विने गति नाहि आना ॥
भव-बंधन चोड़ मेरि । कर ओढ़ि तुति कर मोढ़ि ॥
कथलि बारि परिणाम । सबहि बोलहु राम राम ॥

श्लोक

आदित्या ईश्वरज्ञानं निशम्य मधुसूदनः ।

मोहनार्थं निजमायां ततान जनमोहनीम् ॥

सूत्र०—तदनन्तर अदितिक ईश्वरज्ञान देखिये वेणवी माया बिलारि अदितिक मन मोहित करिये श्रीकृष्ण कर गोरि प्रणाम कय बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे माता, तुहो हामार परम देवता । आमाक सर्वथा आशीर्वाद करअि ।

सूत्र०—अदिति शुनि कहुँ परम सकलचित्ते कृष्णक गले धरि कहुँ बुलिते लागल ।

अदिति—हे पुता, तुहुँ चिरंजीव हव । हामाक वरदाने देवता असुर तुहाक जिनिये नाहि शरय ।

सूत्र०—तदनन्तर श्रीकृष्ण देवित विदाय कयल । वरुणक छत्र मणिपर्वत इन्द्रक हाते समायल । देवतासबत बिदाय करि कहौ नारद सहिते सभार्ये परिवर्ति बेछे चलल ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग गौरी—जतिताल ।

श्रु०—लीलागति पाह, भुवन भुलाइ मधुर मूर्ति सुरारि ।

लपलासे चले रंगे संगहि धर नारि ।

पद—उरे वनमाला माणिक मणि वनन ईसत हासा ।

तप जलधर सोभा तनु पीत अम्बर भाषा ॥

पद पंकज मंजीर रोले, पल्लव परकाशा ।

भक्ति मुकुति हेतु कहतु केशव दासा ॥

सूत्र०—येचन मधुर मूर्ति श्रीकृष्ण परम लीला गति स्वर्ग वासीक मन मोहि कौतुक चलल । तदनन्तर ये कथा भेल, ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

श्लोक

धृत्वा वस्त्रे पति प्राह सती रोष समन्विता ।

क वासि पारिजातं त्वं नानीय मधुसूदन ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवी सत्यभामा कृष्णक पीत वस्त्रे धरि कहौ महाक्रोध हुवा बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, तेहुँ मरल सत्य कयल । पारिजात नालया तुहुँ काहा जाव ? तोहाक चित्त बुझये नाहि ।

श्रीकृष्णक—हे पुये हामु विचोरल दोष नाहि धरवि । श्रीकृष्ण नारदक बोल । हे क्षुद्र-राज, तुहुँ सक्ते याव । इन्द्रत सोनि पारिजात वृक्ष पुयाक निमित्ते सक्ते आन गिया ।

सूत्र—कृष्णक बाणी सुनि नारद चलि गिया इन्द्रक बोल ।

नारद—हे देवराज, श्रीकृष्ण तोहाक पारिजात खोजल । सत्यभामाक निमित्त आनि सत्वर दिआ पठाव ।

सूत्र०—नारदक बाणी सुनि परमकोप होया शची उत्तर देलह ।

शची—अः अभाम्य कपाल ! इन्द्रानी शचीक पारिजात कथाक, मानुषी सत्यभामा विन्धित साधे गेल ? ऋषिराज बोल गिया, यबे अनेक पुण्य कय कहुँ अमरावतीक अधिकारिनी हय तेवे पारिजात परिश्रान करिते पावे; हमार पारिजात इन्द्रे दिते पाखे नाहि ।

इन्द्र—हे ऋषिराज, देवराजीक पारिजात किमने दिते पारि ? स्त्रीक कथा कृष्णते विदित, बोल गिया ऋषिराज ।

श्लोक

नारदस्तु ततोऽभ्येत्य भगवानाह केशवम् ।

इन्द्रान्या वर्णितं यत्तत्तु कृष्णे सर्वप्रवर्णयत ॥

सूत्र०—तदनन्तर नारद परिवर्ति आसि कहुँ शची जे बोलल, कृष्ण सत्यभामाक आगु सभ कहल ।

नारद—हे कृष्ण, पारिजातक निमित्त तुहुँ पठावल, हासु बड़ि लाज भेलो । सत्यभामाक बहुत गालि पारावल माथ । पारिजातक नाम सुनि शची कोवे बोलल—अः कथाक मानुषी सत्यभामा शचीक पारिजात विन्धिते इच्छा कयल । अभाम्य कपाल; यब तप जप आचरि जन्मान्तरे अमरावतीक अधिकारिणी हय तब पारिजात पावब बल गिया । हे कृष्ण, देवीक बिकार सुनिबे इन्द्र दरे, हा हा कि भेलि ?

सूत्र०—ताहेक सुनि सत्यभामा कोवे कम्बमान हया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामाक कदमिते तोहो आनल । अनन्तर बेरि शची, ताहेक चाटु कय पारिजात नेवब । अः बिकार होक । हे प्राणनाथ काहेक भय थिक ? सत्वर पारिजात आन गिया ।

नारद—अः देवी महल कहल । हे श्रीकृष्ण सत्वर पारिजात आनह ।

श्लोक

निशम्य सत्यभामाया वचनं कञ्जलोचन ।

जहाइ सहस्राक्षस्य पारिजातसर्वं हरि ॥

सूत्र०—तदनन्तर श्रीकृष्ण पुपाक वाक्य सुनिबे तत्काले पारिजातक समीप बापि सन्निधि उपारि आनल । देखि रखीया सब कोलहाल कये बोलल ।

रखीया—हे कृष्ण, शचीक पारिजात निते तोहारि फोन भेयहार ।

सत्यभामा—अबे रखीया सब, तोहाक शचीत कह गिया सत्यभामा पारिजात निजा बाइ, अब यत शक्ति थिक राखीक आसिया ।

सूत्र०—सुनि रखीया सब इन्द्रशचीक प्रणामि कहल ।

रखीया—हे माता शची, तोहारि पारिजात सब सत्यभामा बहाइ करिये स्वामीक इति हरि निजा बाय, जानि ये खुसाइ तर करह ।

श्लोक

पारिजातस्य हरणं निशम्य कुपिता शची ।

पतिं दुरन्तरं ग्राह भिगस्तु तव विक्रमम् ॥

सूत्र०—पारिजात हरण सुनि शची कोवे, पुरन्दरक बोलल ।

शची—हे स्वामी तोहो विचमान थारिकते हामाक पारिजात मानुषी निजा आइ । आनि तोहाक बिकार थिक । बल्लक बिकार होक ।

सूत्र०—ओहि बुझि इन्द्रक आगे बहुत विलाप कयल ।

इन्द्र—हे पूये तुल जोड़इ, हामाक आगु कृष्ण कोन हय । ताहेक जिन पारिजात एतने आनब, चिन्ता नाहि करबि ।

सूत्र०—ओहि बुझि इन्द्र परम आरामे साजि धनुषार धरि कहुँ देस सब सहित शची समन्विते ऐरावत कन्धे खेदि आवस इन्द्र ।

श्लोक

गत्वा सत्राजितसुतां प्रोवाच कुपिता शची ।

नेष्यसि त्वं पारिजातं किन्तु यज्ञधरे स्थिते ॥

शची—अबे सत्राजितक कुमारि, तुहुँ मानुषी हया हामाक पारिजात निजा पास ।

आः तोहाक अभाय मिलल, अब बज्रघरक हाते सघरो नाहि । माख तब सक्ने पारिजात चोडह ।

सूत्र०—ओहि बोलि बैछे गरजल ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग आसोआरि—खरमान ।

भू०—मातुपी साहस ऐछन तोहारि ।

हरति कुसुम हामारि ॥

पद—स्वामी पुरन्दर कीर बज्रघर, आछन्त देव अन्तकारी ।

पारिजात तब चीख मोरा, राखहुँ जीवन कुमारी ॥

तोहारि स्वामी माधव मातुप, कयलि गरब ताहे लायि ।

ब्रास्य आगे सोहि कोन होइ, कर शची एछन बड़ाइ ॥

शची—आहे सत्यभामा, तोहारि स्वामी माधवक कथा हामु सब जानी । ओहि गोपी-विद्याल गोपाल । उनिकर आगु गोकुलक स्त्री नाहि रहल । देखू कंसक दासी कुलवि ताहेक हातक पड़ावल नाहि । ताहेक आर कि कहय ? ऐछन अनाचार कुण्ठक गरब कवे कहीं हामाक पारिजात निया जाय ?

अः बज्रघाते सघरो नाह भेलि, जानवि ।

श्लोक

निशम्य गर्भवाक्यं सा सत्यभामा हरिप्रिया ।

कोपेन कम्पितवती शचीसामाख्य वल्गलि ॥

सत्यभामा—अये इन्द्राणी, जगतक परम गुरु हामार स्वामी जाहेर नाम मुमरिते महा महा पापी सब संसार भित्तरे, ताहेक अतय निन्दा करह ? अये निलजिनी मरिते न जान ? तोहारि स्वामी इन्द्रक कथा कहिते वणा से उपजे । देखो अज्ञावतीक यत वेद्या तोहाक स्वामीक से नाहि आण्डल । तोहारि स्वामी कयलि कि । गौतम ऋषिक भार्या अहत्या, ताहेक माया करि कहूँ जातिभ्रष्ट कयल । तस्मिन्मते सब शरीर दाकि योनिबाक भेल । अये पामरि एछन इन्द्रक हामाक आगु बखानह ।

सूत्र०—ओहि बुलि सत्यभामा बैछे बज्रल ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग बैलआल—खरमान ।

भू०—पामरि हरिक करलि श्रद्धाह ।

आगु चरण पंकज-रज परशि मारि देखि कति लाइ ॥

पद—ओहि जगत गुरु ब्रह्म-यज्ञ कर परि परनाम याहारि ।

कैले दासी शची ऐछे स्वामीक कर कन्दल ब्रधन नेहारि ॥

बाहेर नाम-गुण गाइ पापी तरे भक्ति मुक्ति मिलावे ।

ऐछे गोविन्दक निन्दन पामरि शंकर कह हरि-पावे ॥

सत्यभामा—अये दानवक बेटी इन्द्राणी, हामारि आगु तोहारि अशरीर

बड़ाइ । हामु परम दर्प कये बहु पारिजात आनल । देखु अब तोहक

स्वामी पुरन्दरक यत शक्ति धिक ; युद्ध कय हामार हातक पारिजात निषे

काडक, देखि तब सकल बड़ाइ कयलि ।

सूत्र०—देवी सत्यभामाक अतये विकर्षना शची छुनि शची कोपे अवमाने इन्द्रक कोलल ।

शची—हे स्वामी देवराज, तोहाक जीवन शिक धिक, मातुपी स्त्रीक अतये कदर्थन छुनि रहइछ छि, तोहाक पुरुष तेज विछो नाहि । अः देवताक इन्द्र मिला चोलावलि ।

श्लोक

मत्तः पुरन्दरो देव्या पीडितो वाक्यशोभकैः ।

कोपेन धनुरादाय युद्धाय सन्मुखोऽभवत् ॥

सूत्र०—तेदनन्तरः पुरन्दर वाक्य-शरे पीडित हुआ शचीक गरिहा छुनि कहौ परम कोपे धनु भरि युद्ध करिते श्रीकृष्णक सन्मुख भेलह । देखि सारंग शंकरि श्रीकृष्ण

गरुडक कवे इन्द्रक समुल हुवा रहल । ताहे देखि पुरन्दर दर्पे ओलल ।

इन्द्र—अये यादव, शचीक पारिजात कैछे निवा जाव । ओहि शक्तितर शरे तोहारि प्राण चोडावव हामाकु आगु काहा जावव ।

सूत्र०—पेछन प्रकारे बहुत बलाह । दिव्यबाण हानि घेछे रामोवर पुरन्दर दुहो महाबुद्ध
कपल आइ लोक ताहे देखह छुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग तुर-पड़िताल ।

सू०—गरजि बासव बाण प्रहारे । आजु जीव लेहु तोहारि रे ॥

पद—पेछि ताहे हरि करे सारंग धरि । करु शर सत्वर मुरारि ॥

खेदि आनगण हरलि चेतन । इन्द्रक हृदये विदारि रे ॥

कथा—कृष्णक बाण प्रहारे मूर्छित होइ पुनः चेतन पाइ इन्द्र बोल ।

इन्द्र—अये श्रीकृष्ण यव पारिजात जोइव तव चोरह ; नाहि ओहि बज्र सन्धाने तोहरि
प्राग चोड़ाउँ ।

कृष्ण—अये दुष्ट देवराज, हामाक भीति देखान, यत शक्ति थिक प्रहार देखि ।

सूत्र०—शुनि इन्द्र बज्र भरिये पुनः स्वरथ हवा कृष्णक हानल । श्रीकृष्ण हासि हासि
घेछे लुम्फि भरल ताहे देखह छुनह । निरन्तरे हरि बोल ॥

पद—स्वरथ कलेवर पुनः पुरन्दर, भरल बज्र बीर तोलि ।

हानल संधाने बाण अब लेलहुँ रह रह यादव बोलि ॥

सूत्र०—बाणबुद्धे नयारि पुरन्दर परम आशोषे कोषे श्रीकृष्णक बज्र प्रहारल । हरि
हासि बज्रक लुम्फि भरल ।

श्लोक

ततः कृष्णो रथा चक्रं शक्रं प्रति गृहीतवान् ।

इन्द्रो भीत्याभ्यद्रवत्तं स पञ्चाब्दीययन् वयी ॥

कृष्ण—अये दुष्ट देवराज, यव तोहारि प्रहार हामु सहल, अब हामार प्रहार सम्बरह ।

सूत्र०—ओहि बुलि परम प्रारम्भे इन्द्रक लालि चक्रतोलि भरल । ताहेक देखि इन्द्रक
हृदय कम्प लागल । हात पाव धिर नोहे, महा भये हसित चाइ लवहि
पलावल । ताहे पेलि श्रीकृष्ण हासि हासि पाचु पाचु घेछे इन्द्रक खेदल ताहे
देखह छुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग कानड़ा—पड़िताल ।

सू०—प्राणरे कातरे इन्द्र पलाइ । पाचु पाचु हासि माधवे भाइ ॥

पद—रे रे पुरन्दर डाके मुरारि । रह रह काहे पलायव वज्रधारी ॥

लवरे बासव पाचु नीचाइ । कृष्णक किकरे शंकरे गाइ ॥

सूत्र०—रह रह इन्द्र बोलि डाकि डाकि श्रीकृष्ण पाचु पाचु याइ, तथापि इन्द्र धिक्के
पलाइ, रहये नाहि । ताहे पेलि देवी सत्यभामा कर्धना करि कहुँ हासि
बोलल ॥

सत्यभामा—आहे पुरन्दर, तुहुँ कि निमित्त पलावल ? देखक राजा हुवा मानुष कृष्णक
भये भंग देखह, उचित नहे । तोहारि अमु पारिजातक मंजरी परिधान
करिये शची लासवेश करि वेड़ाये । तुहुँ बज्रधर वीर अब केये पलाय ?
लाजक पिठि देखह । अये पावरि शची ओहि इन्द्रक देखाय अवधे दर्
कयलि, अब तोहारि भतारक केछे नाहि पलाटावा ? हामु मानुषी हवा
तोहारि पारिजात निवा जाउँ, ओहि तापे मरिसे न जान ?

श्लोक

ततः पुरन्दरो निन्दां देव्याः श्रुत्वातिदुःखहाम् ।

निवर्षोपायं धत्तनं सत्यभामैर्निबोध मे ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवीक निन्दा सुनिवे इन्द्र परिभर्त्ति बोलल ।

इन्द्र—अये सत्यभामा, ओहि श्रीकृष्णक यह पत्नी धिक ताहेक मध्ये तुहुँ यदि प्रचण्ड
प्रगल्भा इहा हामु जानलु कि निमित्त हामाक अतये कर्धना करइ ? देखु
ओहि कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, ब्रह्मा, मरेश सेवित पाइ पंचज जगतक परम
गुरु नारायण श्रीकृष्ण । ताहेत हामु युद्ध हारल, इहात कौन लाज धिक ?
तुहुँ स्त्री जाति किछो बुझये नाहि, हामाक मिछा बलाह ।

सूत्र०—ओहि बोलि इन्द्र आपुनाके गरिहा कपल ।

इन्द्र—हा हा हामु वापी, माया मोहित हुवा परम ईश्वरक युद्ध कपल । हानक
धिकार होक ।

सूत्र०—ओहि बोलि भये कम्पित तनु नाहि नाहि बोलि कर योरि कृष्णक आगु दंडवते
पड़ि परणामे नुति बोलल ।

पद्याड

जय जय यादव देव-मुरारि । जय जय कंस केशी अन्तकारी ॥
जय जय गिरि गोवर्द्धनधारी । जय जय भक्त भीति भय हारी ॥
जय जय महित विषधर कालि । जय जय वामन बलिक निकालि ॥
जय जय निर्जित कपिशर बाली । जय जय आसुरेव जनमाली ॥
जय जय विभुवन अनुवाम । जय जय निज जन पूरण-राम ॥
जय जय अष्टिक मोरण राम । जय जय पातेक तारेक नाम ॥
तोहारि माया-मोहित अन्ध । कयलु बुद्ध देव हामु मन्द ॥
अत अपराध सहस्र हरि मोद । चरणे शरण लेलु अब तोड ॥
ओहि इन्द्र पद आपद घोर । दूर कर हरि कुमति मोर ॥
मायाओ भिक्षा परिधान कय कथा । धरयो तोहारि भक्तिक पथा ॥

सूत्र०—ओहि नुति करिये पुरन्दर परम वेराग्ये कृष्णक आगु परि बहुत बिलाप कयल ।

श्लोक

इष्ट्वा कृष्णो विश्रुत्वाह तस्य तन्मिलम्भनः ।
सन्तुष्यति यतो देव ज्येष्ठभ्राता भवान्मम ॥

सूत्र०—तदनन्तर इन्द्रक भीतिकातर देखिये श्रीकृष्ण हासि हासि हाते धरि कहौ तोलि
आश्वास बोलल ।

कृष्ण—हे पुरन्दर, तुहो हामार ज्येष्ठ भ्राता तोहारि दोष हामु किलो धरखे नाहि ।
किलो नाहि करखौ, भर तोहाक ब्रज लेहु । ओहि पारिजात यदि मुले
नाहि देव सब बहाक निधा जाव ।

सूत्र०—शुनि सत्यभामा कोय कटाक्षे निरेखि कृष्णक दशन चर्चिय मने गरिहय ।

सत्यभामा—हा हा कि भेलि स्वामीक मति । ओहि इन्द्रक चाटु गुनल । आरमार
नरकबध निमित्तो कत कातर कये आनि कार्यसिद्ध भेल देखि हामाक बुद्ध
भेजायल । उतिकर बचने संजात भिक् ! अः हामार पारिजात दिते कोन
अधिकार रहे ।

इन्द्र—हे स्वामीकृष्ण, ओहि पारिजात तुहूँ निधा जाव । सुधर्मा सभा रहित यत
सम्पति हामात भिक् सब द्वारकाक लागि पठावै । यावत तुहो भूमित रहव
तावत उपभोग हुया रहोक ।

श्लोक

इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा प्रीतिः पीताम्बरो ययौ ।
पारिजातं तदादाय तमनुशय्य भार्यया ॥

सूत्र०—इन्द्रक सन्वाच शुनि श्रीकृष्ण भार्या सहित हरिये पुरन्दरत अनुमति पाइ यैले
पारिजात लेया कौतुके केदाव चलल, आदे लोक ताहे देखिहु गुनह । निरन्तरे
हरि बोल ।

गीत

राम बेलोआर—परिताल ।

ध्रु०—पारिजात लेया चलल लयलासे
हासे हरिये बरनारी ।

मत्त राज-गामिनी कामिनी कोले
भोले चलिय मुरारि ॥

श्याम मुचलि रतन उरे माला
मणि मंजीर मुरावे ।

पूया समे चले रंगे तहणी करिणी संगे
मातंग बैछे लीलाने ॥

मकरि कुण्डल गन्द दोलि विराजति
राजीव लोचन स्वामी ।

कृष्ण किंकर कहई हरिको
चरणे परि परणामि ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवी सत्यभामा सहित लीलाये कौतुके केलि कये श्रीकृष्ण शारिकापुर
प्रवेश भेल । कृष्णक विजय सुनिषे द्वारकात महामहोत्सव मिलल । डावे
डावे जय-वाजन बजावल । स्वामी बुद्ध जिनि आचल शुनि रकमिनी सखी सब

सहित आसि बहुत सवये परगाम कथलि । कुण आलौंगि आवासल ।
रुक्मिणी सखी समे कुणक एकपाशे रहल । सत्यभामा मर्भे कथे कहूँ
रुक्मिणीक बोलल ।

सत्यभामा—हे विदर्भराज-कुमारी, तुहुँ स्वामीक धामे गोटा एक पारिजात पुष्प पावल ।
देखु देखु दावत सोहि पारिजात तर सनुले उपारि कृष्णक हाते नाहि
आनल, तावत छाड़लो नाहि । हामार सौभाग्यक पेलो पेलो ।

श्लोक

निशम्य सत्यभामाया भार्य भिन्नमनसि ।

श्रोवाच्च भक्तोर्महिमा वर्णयन् कविराननी ॥

कथा—सत्यभामाक मर्भे भाव सुनि रुक्मिणी हासि बोलल ।

रुक्मिणी—अवे भगिनी सत्यभामा, कि कहैछ ? जगतक परज गुरु श्रीकृष्ण उनिकर
चरण-सेवा करिते ब्रह्माण्ड भितरे कोन दुष्टलम थिक ? धर्म अर्थ काम मोक्ष
चारि पदारथ हाते मिलये तुहारि पारिजात कोन कथा ?

सूत्र०—ऐचन भक्तिक महिमा कहिते रुक्मिणीक प्रेम परशल । हरि-चरण-सेवाक
महिमाक येछे वर्णायल तादे देखइ छुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग वसन्त—रङ्गिताल ।

ध्रु०—अतवे कैछन कहसि मायि ।

हरिक भक्तिक सति कोन निमिलाइ ॥

पद—ओहि अरुण पद-यंकज पिदाइ । मनोरथ चारि पदारथ दाइ ॥

पारी प्रातेक सरे नाम गुण गाइ । कह संकर हरि बिने गति नाइ ॥

सूत्र०—भक्तिक महिमा कहिते कुमारीक प्रेम परशल । नयन भुराइ रहल ।

श्लोक

सत्यभामा पतिं ग्राह ग्राह प्रमो त्वं किमु प्रेक्षसे ।

पारिजात तर्ह्ये द्वारि रोपणं कुरु मेदरे ॥

सत्यभामा—हे स्वामी कुण, कि निमित्त तुहुँ अपेक्षा करइ । हामार द्वारे पारिजात
सत्तरे रोपण करइ ।

सूत्र०—पूयाक बाजी सुनि श्रीकृष्ण द्वारक विदुरे आपुन हाते पारिजात तर रोपन
कयल । देखि देवी बोल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, अः कि कयल ? हामाक बहुत सतिनी धिक । पारिजात फूल
खोरि करि निते कत कष्ट करि बैड़ाव । एधा नहे हामार द्वार निकटे
मिया रोपण करइ ।

सूत्र०—सुनि श्रीकृष्ण पूयाक मनपूरि पारिजात पुनर्वार उपारि बेबीक द्वार समीप
रोपि थापल । तदनन्तर सत्यभामा मनोरथ पूरि श्रीकृष्ण स्वामीक परगामि
सखि समे प्रशंसा कये बहुत कौतुके कयलि ।

श्लोक

साधितार्थोऽथ नाथो तः पत्नीभ्यां सह वैदाव ।

कौतुकी क्रीडयामास हालसंगभवावके ॥

सूत्र०—तदनन्तर नरकासुर पारि, वैद्यकाय साधि, इन्द्रक जिनले पारिजात आनि
पूयाक द्वारे रोपि कृत्य कृत्य दया श्रीकृष्ण भाव दूहो सहित गैछन लीला केलि
कौतुके कयल, तादे देखइ छुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग पुर्वी—खरमान ।

ध्रु०—जगजन जीवन मधाइ ।

करु कौतुक केलि कामिनी मिलाइ ॥

पद—कुंचित चारु चिकुर चिबुक धर
कर चुम्बन वनमात्मी ।

कांचुरि कोरे भोरे रसिक गुरु
कुच तख वन वालि ॥

रमया रमणी मिलिते माणिक
मकरि कुण्डल दोले ।

हीर रचित मणि मोतीम माले
 रेशमहार उरे लुले ॥
 चरणे रतन मणि मंजीर भक्तके
 कनक किंकिणी करो रोले ।

श्रीजगतानन्द भक्ति रत्तिकनिक
 कृष्ण भिक्करे ओहि बोले ॥

सूत्र०—ऐछन केलि-कला कौतुक कये श्रीकृष्ण भक्ता रमणी सत्रक मनोरथ पूरि
 द्वारिकापुर प्रवेशि रहल । ओहि पारिजात हरण हरिक परम लीला-चरित्र
 अछाये जे सब लोकै छुने भये कृष्णक चरणे ताहेरि परम भक्ति ब्रह्मवह ।
 जानि निरन्तरे हरि बोल ।

श्लोक

कृष्णपादप्रसादेन शंकरं कृष्ण भिक्करः ।
 चकार श्रीपारिजातहरणं नाम नाटकम् ॥

मुक्तिमंगल ॥ जय छन्द ॥ भट्टिमा ॥

जय जय जग - जीवन मुरारि । कंस - केशी - अक - अव - अन्तकारी ॥
 सो व्यापक बिभू ब्रह्म अधिकारी । मुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
 जय जय परम पुरुष देवको देवा । ब्रह्मा महेश कब जो पद सेवा ॥
 सोहि नारायण भुवन आधारी । मुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
 जय जय माधव धेतुक मारी । आनन्द चिरिन्द अविनि - बिहारी ॥
 सोहि गोपाल गोवर्द्धनधारी । मुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
 जय जय पीताम्बर बनमाखी । कालिन्दी हृदे जो मर्दल कालि ॥
 सोहि गोविन्द भक्त - भवहारी । मुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
 जय जय दृष्ट देख अन्तकारी । कुबलय मोहन दन्त उपारि ॥
 शरत रमन जोहि गोपिनी नारी । मुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
 श्रीजगतानन्द दलपति जान । हरिको पद - पंकज भवमान ॥
 करावत नाद ओहि श्रद्ध छन्दे । कृष्णक भक्ति करिने प्रबन्धे ॥

पारिजात हरण आहेरि नाम । छुन लुभवन हरिगुण अनुपाम ॥
 कलियुग मध्ये भरम ओहि सार । नाहि नाहि गति हरि चिने आर ॥
 कयलि कलि देखु एकाकार । पाप - पुण्य किलो नाहि बिचार ॥
 मलमति झोक अवहु नाहि जानि । नाहि नाहि गति चिने शरंगपाणि ॥
 भज हरि चरणे जोदहु सब आश । हरिनामे कब सुदृढ़ विशीवास ॥
 धरमक उपरि राजा नाम । जानि सश्रद्ध नरे बोल राम राम ॥

—*—